विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 09-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

पाठ :द्वितीय: पाठनाम् बुद्धिर्बलवती सदा

- **जम्बूक**:-यदि एवं तर्हि माम् निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। व्याघ्र:तथा कृत्वा काननं ययौ ।

  शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दुरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती चिन्तितवती - जम्बुकृतोत्साहाद्

  व्याघ्रात् कथम् मुच्यताम् ? परं प्रत्युत्पन्नमति:सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जतन्त्युवाच –

- **शब्दार्था**:

  बद्ध्वा -बाँधकर ,ययौ –दोनों चले गए

  आयान्तम् –आए हुए को , मुच्यताम् –छुड़ाया जाय

  आक्षिपन्ती - झिड़कती हुई,भर्त्सना करती हुई,आक्षेप करती हुई

  तर्जयन्ती –धमकाती हुई ,डाँटती हुई

- **अर्थ**

  सियार -यदि ऐसा है, तुम मुझे अपने गले से बांधकर जल्दी चलो। वह बाघ वैसा करके जंगल में गया । सियार के साथ बाघ को फिर से दूर से आता हुआ देखकर बुद्धिमती ने सोचा- सियार के द्वारा उत्साहित किए गए बाघ से कैसे छूटा जाए? परंतु जल्दी से सोचने वाली उसने सियार की तरफ उंगली से धमकाते हुए उससे कहा -

  यदि ऐसा है